IJARASEM

ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 10, Issue 2, March 2023

INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA

Impact Factor: 6.551

+91 9940572462 +91 9940572462 ijarasem@gmail.com www.ijarasem.com

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | | Impact Factor: 6.551| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 2, March 2023|

समाजशास्त्र का महत्व: एक समीक्षा

डॉ. दविंदर सिंह

पी एच डी समाजशास्त्र फतेहगढ़ साहिब पंजाब

सार

समाजशास्त्र के मूल्य के बारे में पूछना काफी स्वाभाविक है, यह किस उद्देश्य की पूर्ति करता है और इसका अध्ययन करने से क्या लाभ होता है। पारेतो जैसे कुछ आलोचक हैं जो दावा करते हैं कि समाजशास्त्र का शायद ही कोई मूल्य है क्योंकि यह जीवन की वास्तविकताओं से संबंधित नहीं है और यह केवल उन विचारों से संबंधित है जो वैज्ञानिक खोजों से रहित हैं, सामाजिक जीवन में बहुत कम महत्व रखते हैं। लेकिन यह समाजशास्त्र के मूल्य के बारे में सही दृष्टिकोण नहीं है। समाजशास्त्र की महत्वपूर्ण अवधारणाओं का अध्ययन हमें विश्वास दिलाएगा कि यह विज्ञान अत्यधिक मूल्य का है।

प्रमुख शब्द

समाजशास्त्र, सामाजिक विज्ञान, सामाजिक समस्याएं

परिचय

समाजशास्त्र सामाजिक संरचना के भीतर सामंजस्य और व्यवस्था के सिद्धांतों की खोज करना चाहता है, जिस तरह से यह एक पर्यावरण के भीतर जड़ें और बढ़ता है, बदलती संरचना और बदलते पर्यावरण का गतिशील संतुलन, निरंतर परिवर्तन के मुख्य रुझान, जो बल निर्धारित करते हैं किसी भी दिशा में इसकी दिशा, सामंजस्य और संघर्ष, संरचना के भीतर समायोजन और कुसमायोजन के रूप में वे मानव इच्छाओं के प्रकाश में प्रकट होते हैं, और इस प्रकार साधनों का व्यावहारिक अनुप्रयोग सामाजिक मनुष्य की रचनात्मक गतिविधियों में समाप्त होता है। - मैकाइवर। समाजशास्त्र भौगोलिक पर्यावरण के कुछ पहलुओं और कुछ प्राकृतिक पर भी ध्यान देता है, जैसा कि मानवीय घटनाओं के विपरीत है, लेकिन यह रुचि मनुष्यों और मानव जीवन के उत्पादों के साथ जुड़ाव के लिए गौण है। हमारे अध्ययन का सामान्य क्षेत्र मनुष्य है क्योंकि वह अन्य पुरुषों से और अन्य पुरुषों के निर्माण से संबंधित है जो उसे घेरे हुए हैं।' -एम, ई जोन्स।

समाजशास्त्र समाज का वैज्ञानिक अध्ययन करता है:

समाजशास्त्र के उद्भव से पहले, समाज का अध्ययन अवैज्ञानिक तरीके से किया जाता था और समाज कभी भी किसी भी विज्ञान का केंद्रीय सरोकार नहीं रहा था। समाजशास्त्र के अध्ययन से ही समाज का सही मायने में वैज्ञानिक अध्ययन संभव हो पाया है।

बल्कि, समाजशास्त्र ने वर्तमान दुनिया की कई समस्याओं पर अपने प्रभाव के कारण इतना अधिक महत्व ग्रहण कर लिया है कि इसे सभी सामाजिक विज्ञानों के लिए सबसे अच्छा दृष्टिकोण और वर्तमान स्थितियों के लिए महत्वपूर्ण अध्ययन माना जाता है। मानव मामलों की स्थिति में किसी भी उल्लेखनीय सुधार के लिए समाज के बारे में वैज्ञानिक ज्ञान पूर्व-आवश्यकता है।

समाजशास्त्र व्यक्तियों के विकास में संस्थाओं की भूमिका का अध्ययन करता है:

फिर, समाजशास्त्र के माध्यम से ही महान सामाजिक संस्थाओं और प्रत्येक व्यक्ति के संबंध का वैज्ञानिक अध्ययन किया जा रहा है। घर और परिवार, स्कूल और शिक्षा, चर्च और धर्म, राज्य और सरकार, उद्योग और कार्य, समुदाय और संघ, ये वे महान संस्थान हैं जिनके माध्यम से समाज कार्य करता है।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | | Impact Factor: 6.551| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 2, March 2023|

इसके अलावा, वे व्यक्ति के कंडीशनर हैं। समाजशास्त्र इन संस्थाओं और व्यक्ति के विकास में उनकी भूमिका का अध्ययन करता है और उन्हें व्यक्ति की बेहतर सेवा करने में सक्षम बनाने की दृष्टि से उन्हें सुदृढ़ करने के लिए उपयुक्त उपाय सुझाता है।

समाज को समझने और उसकी योजना बनाने के लिए समाजशास्त्र का अध्ययन अपरिहार्य है :

समाज कई पेचीदगियों के साथ एक जटिल घटना है। समाजशास्त्र के अध्ययन के बिना इसे समझना और इसकी विभिन्न समस्याओं को हल करना लगभग असंभव है। यह ठीक ही कहा गया है कि हम समाज को उसके तंत्र और निर्माण के ज्ञान के बिना समझ नहीं सकते हैं और ठीक नहीं कर सकते हैं, जैसे कोई भी व्यक्ति, अपनी इंद्रियों में, अपनी मशीनरी के बारे में कुछ भी जाने बिना और विभिन्न भागों को फिट करने के तरीके के बिना मोटर कार को ठीक करने की कोशिश करने का सपना नहीं देखेगा। एक दूसरे के साथ में। समाजशास्त्र का सामाजिक समस्याओं के समाधान से वही संबंध है जैसा कि कहते हैं। जीव विज्ञान और जीवाणु विज्ञान चिकित्सा या गणित और भौतिकी से लेकर इंजीनियरिंग तक। सैद्धांतिक और प्रायोगिक विज्ञानों में किए गए शोध के बिना रोग या पुल-निर्माण की आधुनिक तकनीकों का उपचार असंभव होगा।

इसी तरह, समाजशास्त्र द्वारा किए गए अन्वेषण के बिना कोई वास्तविक प्रभावी सामाजिक योजना संभव नहीं होगी। यह सहमत लक्ष्यों तक पहुँचने के लिए सबसे कुशल साधन निर्धारित करने में हमारी मदद करता है। किसी भी सामाजिक नीतियों को लागू करने से पहले समाज के बारे में कुछ ज्ञान आवश्यक है।

उदाहरण के लिए, मान लीजिए कि जन्म-दर को कम करने की नीति को वांछनीय माना जाता है: इस लक्ष्य को प्राप्त करने का सर्वोत्तम साधन विशेष रूप से आर्थिक दृष्टि से निर्धारित नहीं किया जा सकता है क्योंकि पारिवारिक संगठन, रीति-रिवाजों और पारंपरिक मूल्यों के मामलों को ध्यान में रखा जाना चाहिए और इनकी आवश्यकता होती है समाजशास्त्रीय प्रकार का विश्लेषण।

सामाजिक समस्याओं के समाधान में समाजशास्त्र का बहुत महत्व है:

वर्तमान विश्व अनेक समस्याओं से ग्रसित है जिनका समाधान समाज के वैज्ञानिक अध्ययन द्वारा ही किया जा सकता है। यह स्पष्ट है कि सामाजिक बुराइयाँ यूं ही नहीं होती हैं और हर चीज के अपने कारण होते हैं। समाजशास्त्र का कार्य वैज्ञानिक अनुसंधान की विधियों के माध्यम से सामाजिक समस्याओं का अध्ययन करना और उनका समाधान खोजना है। मानव मामलों का वैज्ञानिक अध्ययन अंततः ज्ञान और सिद्धांतों का शरीर प्रदान करेगा जो हमें सामाजिक जीवन की स्थितियों को नियंत्रित करने और उनमें सुधार करने में सक्षम बनाएगा।

समाजशास्त्र ने मनुष्य के आंतरिक मूल्य और गरिमा की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया है:

समाजशास्त्र मनुष्य के प्रति हमारे दृष्टिकोण को बदलने में सहायक रहा है। एक विशाल विशिष्ट समाज में, हम सभी पूरे संगठन और संस्कृति की मात्रा तक सीमित हैं जिसे हम प्रत्यक्ष रूप से अनुभव कर सकते हैं। अन्य क्षेत्रों के लोगों को हम शायद ही करीब से जान सकें। उन उद्देश्यों की अंतर्दृष्टि और सराहना करने के लिए जिनके द्वारा दूसरे रहते हैं और जिन परिस्थितियों में वे मौजूद हैं, समाजशास्त्र का ज्ञान आवश्यक है।

समाजशास्त्र ने अपराध आदि की समस्याओं के प्रति हमारे दृष्टिकोण को बदल दिया है।

समाजशास्त्र के अध्ययन के माध्यम से ही अपराध के विभिन्न पहलुओं पर हमारा संपूर्ण दृष्टिकोण बदल गया है। अपराधियों को अब पतित जानवरों के रूप में नहीं माना जाता है। इसके विपरीत, उन्हें मानसिक कमियों से पीड़ित मनुष्य के रूप में माना जाता है और तदनुसार उन्हें समाज के उपयोगी सदस्यों के रूप में पुनर्वासित करने का प्रयास किया जाता है।

सामाजिक स्थितियों को समझने और व्यक्तिगत समस्याओं को हल करने में जो सराहनीय सेवा प्रदान कर रहे हैं, वे अपराध विज्ञान और दंडशास्त्र और सामाजिक कार्य और सामाजिक चिकित्सा के विज्ञान हैं, लेकिन समाजशास्त्र की दासी हैं।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | | Impact Factor: 6.551| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 2, March 2023|

मानव संस्कृति को समृद्ध करने में समाजशास्त्र का महान योगदान है:

समाजशास्त्र के योगदान से मानव संस्कृति समृद्ध हुई है। इसने हमारे दिमाग से बहुत सारे जाले हटा दिए हैं और सामाजिक घटना को अब वैज्ञानिक ज्ञान और जांच के आलोक में समझा जाता है।

लोवी के अनुसार, "हममें से अधिकांश इस आरामदायक भ्रम को पालते हैं कि हमारे काम करने का तरीका संभव ही नहीं तो एकमात्र समझदार है"। समाजशास्त्र ने हमें स्वयं, किसी के धर्म, रीति-रिवाजों, नैतिकता और संस्थानों से संबंधित प्रश्नों के प्रति तर्कसंगत दृष्टिकोण रखने का प्रशिक्षण दिया है। इसने वस्तुपरक, आलोचनात्मक और निष्पक्ष होना भी सिखाया है।

अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान में समाजशास्त्र का बहुत महत्व है:

भौतिक विज्ञान द्वारा की गई प्रगति ने विश्व के राष्ट्रों को एक दूसरे के निकट ला दिया है। लेकिन सामाजिक क्षेत्र में दुनिया विज्ञान की क्रांतिकारी प्रगति से पीछे रह गई है। आज दुनिया के सामने मिलियन डॉलर का सवाल यह है कि यदि मनुष्य एक दूसरे के खून के प्यासे बने रहे तो सभी तकनीकी विकास और वैज्ञानिक प्रगति का क्या उपयोग होगा ।

समाज पर आधुनिक युद्ध के प्रभाव विविध और गहन हैं। आधुनिक युद्ध की सामाजिक कीमत बहुत अधिक और प्रभावशाली होती है। जबकि युद्ध के विभिन्न कारण हैं, अंतर्निहित कारण राज्यों के राजनीतिक संगठनों और उनके संबंधों के बीच चिह्नित कार्यात्मक असमानता है।

एक शिक्षण विषय के रूप में समाजशास्त्र उपयोगी है:

इसके महत्व को देखते हुए समाजशास्त्र एक शिक्षण विषय के रूप में भी लोकप्रिय हो रहा है। महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में इसे महत्वपूर्ण स्थान दिया जा रहा है। यह शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में भी देर से विकसित हो रहा है क्योंकि शिक्षक को न केवल अपने विषय और अपने विद्यार्थियों को व्यक्तियों के रूप में जानने की आवश्यकता है बल्कि उस समूह-जीवन को भी समझना चाहिए जिसके लिए वह उन्हें फिट कर रहा है। समाज के बारे में ज्ञान का प्रसार करने से सामाजिक सोच का उदय होगा, सामाजिक व्यवहार का विकास होगा, सामाजिक नियोजन को बढ़ावा मिलेगा और एक नई सामाजिक व्यवस्था का विकास होगा।

निष्कर्ष:

यह ठीक ही अनुभव किया गया है कि समाजशास्त्र के अध्ययन के बिना अपने देश के प्रशासनिक ढांचे में उच्च पद पर आसीन होने के इच्छुक उम्मीदवारों का प्रशिक्षण और ज्ञान अधूरा और अपूर्ण होगा।

संदर्भ:

1. करलिंगर, एफएन (1973)। फाउंडेशन ऑफ बिहेवियरल रिसर्च, हाफ रोनेहार्ट और विंस्टन, न्यूयॉर्क।
2. मजूमदार, पीके (2005)। सोशल साइंस में रिसर्च मेथड्स, वाइवा बुक्स प्रा. लिमिटेड, नई दिल्ली।
3. मैट हेन एंड अदर्स: ए शॉर्ट इंट्रोडक्शन टू सोशल रिसर्च, विस्तार पब्लिकेशन, नई दिल्ली; 2006
4. न्यूमैन, डब्ल्यूएल (2006)। सोशल रिसर्च मेथड्स: क्वालिटेटिव एंड क्वांटिटेटिव एप्रोचेस (छठा संस्करण) पियर्सन एजुकेशन इंक, नई दिल्ली।
5. सरंतकोस , एस। (1998)। सोशल रिसर्च (द्वितीय संस्करण), पालग्रेव, न्यूयॉर्क।
6. सेल्टिज़ , सीएच (1951)। रिसर्च मेथड्स इन सोशल रिलेशंस, होल्ट राइन हार्ट और विंस्टन।

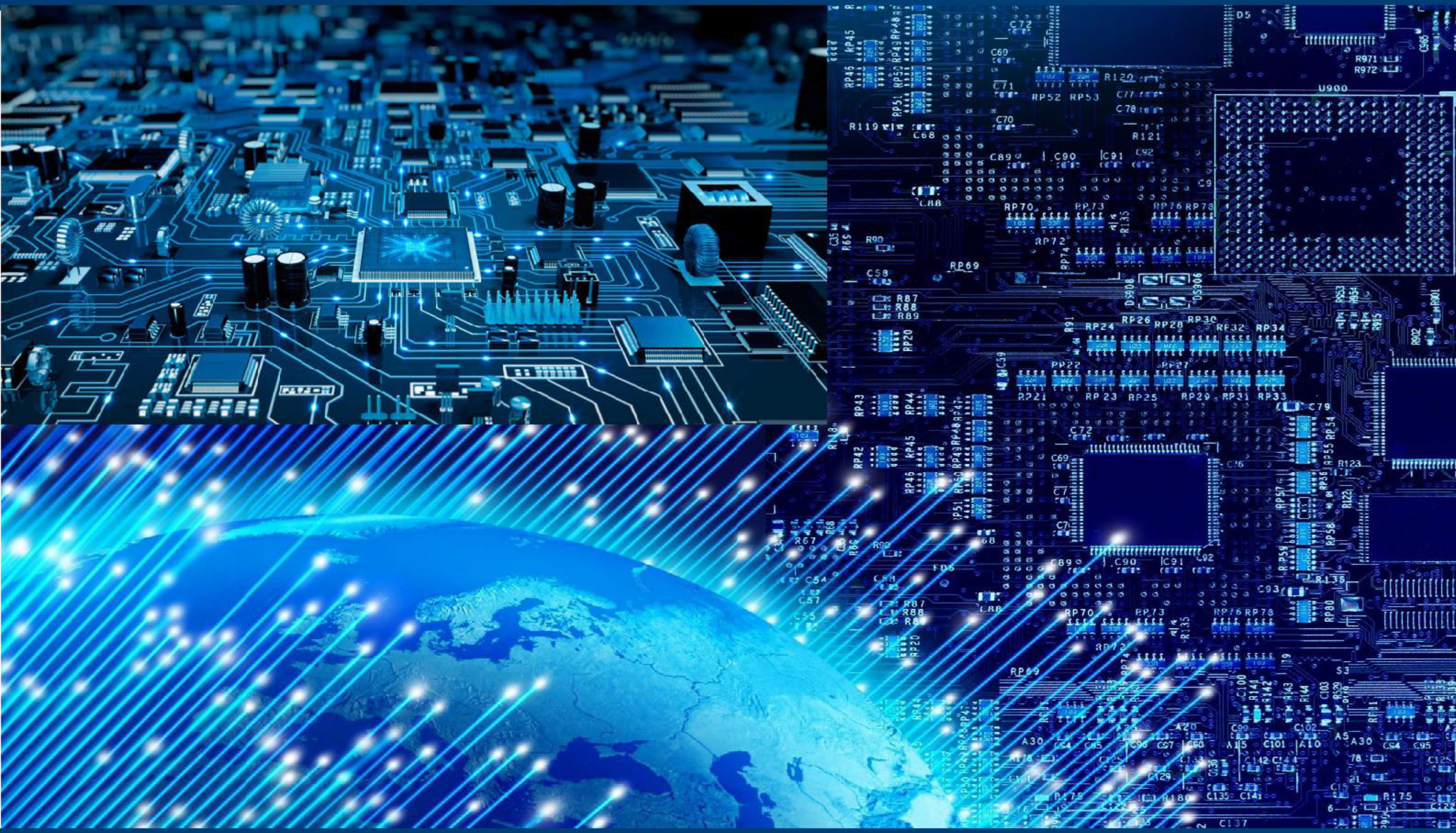

IJARASEM

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर NISCAIR

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |

www.ijarasem.com